वर्ष ६, अंक - ०१, अगस्त २०२५

आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

मां भी तो लड़की है

मां भी तो लड़की है ना
उनकी भी कुछ इच्छाएं हैं
कुछ चाहते होती है ना
फिर क्यों समाज के लोग उन्हें समझने में कतराते हैं और कुचल देते हैं ।
मां एक नारी एक इंसान भी तो है ना थकती है, टूटती है ।
एक दिन की छुट्टी का हक तो उन्हें भी मिलना चाहिए ।
वही मां जो काली है, लक्ष्मी है, अन्नपूर्णा है ।
जिसकी गोद में संसार बसता है कदमों में स्वर्ग बसा है।
फिर भी समाज में कहते हैं माँ चुप हो जाओ तुम्हें अंग्रेजी नहीं आती ।
वही मां जिसे हमें बोलना सिखाया हम उन्हीं को चुप कर देते हैं ।
हम ऐसे समाज में रहते हैं ।
जहां मूर्तियों की पूजा होती है
लेकिन जीती जागती मां की नहीं।
मां तुम्हारी हंसी से
मेरे जीवन का सारा अंधेरा मिट जाता है ।तुम्ही हो वो रोशनी जो हर दर्द सहकर भी मुस्कुराती हो।
मां तुम बहुत अच्छी हो ।
मां तुम मेरे लिए भगवान से भी बढ़कर हो और सच में दिल में तुम्हारा ही स्थान है।
मैं इस कविता के माध्यम से यह बताना चाहती हूं कि नारी सबसे पहले एक लड़की है और उनकी भी कुछ इच्छाएं और सपने होते हैं हमें यह समझना चाहिए कि नारी को बराबरी का सम्मान मिलना चाहिए तभी समाज में सच्चा बदलाव संभव होगा।

- श्रेया सेनवाल, 9 ब

मां की ममता को नमन

मां तेरी ममता का प्याला ।
जैसे अमृत का उजाला।
तेरी बातें तेरी कहानी ।
जैसे बगिया में मधुर रवानी ।
तेरी आंचल छांव बन जाए।
दुख की हर बूंद थम जाए।
तेरी मुस्कान चांद सी प्यारी ।
तेरी मूरत लगे सबसे न्यारी।
मां तू धरती मां तू आसमान।
तेरे बिना सब कुछ है वीरान।
तेरा आशीर्वाद रहे हरदम ।
तेरी ममता को सदा नमन।

- कलिका त्रिवेदी, 10 ब

मेरी प्यारी मां

मां तेरी ममता की छांव जैसे
तपते जीवन में ठंडी ठंडी ठाँव।
तेरे आंचल में सुकून है इतना
कि सारी दुनिया लगे एक सपना ।
तू थकी नहीं कभी मेरी खातिर।
तेरे हर दर्द में भी थी प्यार की तस्वीर।
तेरी गोद में सुकून है ऐसा ।
जैसे मिल गया हो रब के जैसा ।
तेरे बिना अधूरा है हर पल है।
तेरे साथ ही जीवन में हलचल है।
मां तू सिर्फ शब्द नहीं भावना है ।
तेरे प्यार में ही तो सच्ची साधना है।

- यथार्थ नेगी, 9C

मां

मां जैसा ना कोई इस जहान में
ना कभी कोई हो पाएगा।
मां की कमी इस पूरे संसार में
कोई भी ना पूरी कर पाएगा ।
मां शब्द ही कितना अनोखा है
जरा सोचो इसके बारे में
ना धन चाहिए ना पैसा
ना कोई शर्त न कोई मोह
बस वही तो है जो बिन स्वार्थ
करती हैं हमसे प्रेम ।
देखो मां का प्यार भी कितना अनोखा है
कभी गुस्से में या कभी डांट में
बस चाहती है हमारी ही भलाई
हर दुंआ में छुपी है उसी की परछाई।

- पलक्षा, 9 अ

मां की ममता

मां तेरी ममता की छाया
हर दुख में बनी सहारा
तेरी गोदी स्वर्ग समान
तेरा हर पल महान ।
नींद उड़ा कर रात बिताई
हंसते-हंसते पीड़ा छुपाई।
तेरी मूरत मंदिर सी प्यारी।
तेरी बातें सबसे न्यारी ।
तू ही जीवन की आरती ।
तेरे बिना सब है खाली ।
मां तू मेरी पहली गुरु ।
तेरे चरणों में है मेरा प्रभु ।

- आर्या नंदिनी पांडे, 10 ब

- श्रेया सेनवाल, 9 ब

आज़ादी का महोत्सव

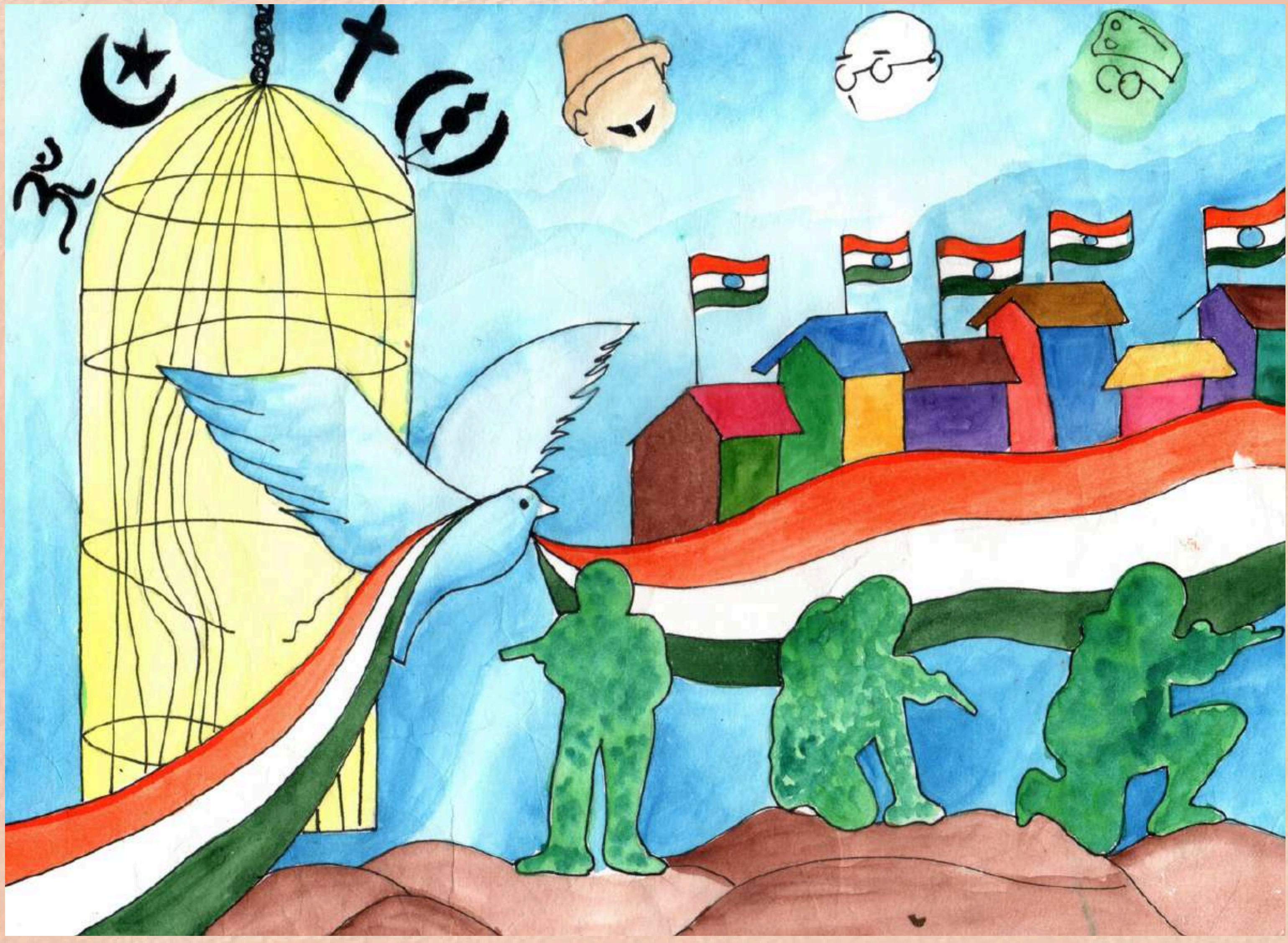

आज़ादी का महोत्सव केवल किसी राष्ट्र या विशेष दिन तक सीमित नहीं होता, यह हर उस क्षण का उत्सव है जब कोई जीवन बंधनों से मुक्त होकर खुलकर सांस लेता है। एक पिंजरे में बंद पक्षी के लिए उड़ान केवल शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि उसकी आत्मा की पुकार होती है। जब वह वर्षों की कैद के बाद खुले आकाश में अपने पंख फैलाता है, तो वह पल उसके जीवन का सबसे बड़ा उत्सव बन जाता है - आज़ादी का महोत्सव।

उस क्षण वह न केवल उड़ता है, बल्कि स्वयं को खोजता है। हवा का पहला झोंका उसके पंखों को नहीं, उसकी सोच को छूता है। उसे अब किसी दिशा, गति या मंज़िल के लिए आज्ञा की आवश्यकता नहीं होती। यही सच्ची स्वतंत्रता है - जहाँ चुनाव स्वयं का हो, निर्णय अपने हों और जीवन अपनी शर्तों पर जिया जाए।

यह पक्षी हम सभी का प्रतीक है। हम भी कई बार मानसिक, सामाजिक या भावनात्मक पिंजरों में बंद होते हैं। जब हम डर, असुरक्षा या सीमित सोच से बाहर निकलते हैं, तभी हमारी आत्मा भी उड़ान भरती है। और वही क्षण हमारे जीवन का आज़ादी का महोत्सव बन जाता है शांत, लेकिन गहराई से मुक्त।

- कृष्ण मनदीप नेगी, 11TH, पीसीएम

जश्न आज़ादी का

पिंजरे में बैठा एक पंछी,
सोचता रहता दिन-रात,
कब उड़ूँ मैं खुली हवा में,
कब मिलें मुझे वो बात।

पिंजरे में दाना-पानी है,
पर दिल में एक खालीपन,
ना खुला गगन, ना हरियाली,
बस लोहे का ये बंधन।

हर सुबह सूरज निकलता है,
पर वो रौशनी फीकी लगती,
खिड़की से जो हवा आती,
वो भी बेगानी सी लगती।

फिर एक दिन पिंजरा खुला,
दिल में उमंगें जाग उठीं,
पंख फैलाए, उड़ चला वो,
बादलों में खो गया कहीं।

अब वो चहचहाता रहता है,
पेड़ों पर, नदियों किनारे,
मुक्त गगन में, आज़ादी में,
पल-पल जीता वो प्यारे।

आजादी है जीवन की जान,
बिना इसके सब सूना है,
पिंजरे का सोना बेकार है,
खुला आकाश ही दूना है।

-अंशुल ध्यानी, -11वीं (पी.सी.एम.)

मेरी गर्मियों की छुट्टियां

मेरी गर्मियों की छुट्टियां 24 मार्च से शुरू हुईं और 30 तारीख तक मैंने अपना सारा काम खत्म कर दिया ,फिर 4 तारीख से हमने अपने गांव जाने की तैयारी शुरू की और फिर 6 तारीख को रात के 2:00 बजे हम गांव के लिए निकल गए और सुबह के 12:00 बजे हम गांव में पहुंच गए फिर उसके बाद हम अपने दादा- दादी और बाकी गांव वालों से मिले और उसके बाद एक दिन हम यानी मैं और मेरी दोस्त घूमने गए हम दोनों अपने गांव से थोड़ा दूर वाले मंदिर में घूमने गए जो कि 1600 साल पुराना है। पहले के समय में वह किसी राजा का राजमहल हुआ करता था ,पर अब उसे एक मंदिर माना जाता है। मैं और मेरी दोस्त ने वहां पर पूजा की और फिर वहां पर बैठकर वीडियो बनाई और फिर मेरी दोस्त ने मुझे उसके बारे में सारी बातें बताई और फिर हम दोनों ने वहां पर लगा हुआ बोर्ड पढ़ा जिसमें उस जगह के बारे में सब कुछ लिखा था। उस जगह का नाम चांदपुर गड़ी था। फिर हम दोनों वहां से घर के लिए निकल गए, घर आते हुए हम दोनों ने एक कोल्ड ड्रिंक पी और एक आइसक्रीम खाई और वहां से अपने घर मस्ती करते हुए पैदल- पैदल आए। हमने रास्ते में बहुत सारे खेल खेलें, हम लोग सड़क के रास्ते आने के बजाय जंगल के रास्ते से आए क्योंकि वह रास्ता छोटा था और हमें बहुत गर्मी लग रही थी और हमने रास्ते में बहुत मजे किए। हम दोनों आराम- आराम से बैठ- बैठ कर आ रहे थे ,पर रास्ते ऐसे थे कि मुझसे चला ही नहीं जा रहा था और मेरी दोस्त मेरा हाथ पकड़ कर मुझे आगे ले जा रही थी एक बार तो हम दोनों फिसल कर सीधे नीचे गिरे और जोर-जोर से हंसने लगे और फिर से चढ़ना शुरू कर दिया और इस बार हम सीधा गांव में जाकर रुके क्योंकि हमें प्यास लगी थी तो हमने धारे में पानी पिया । वह मेरा गांव में आखिरी दिन था इसलिए हमने वहां बैठकर खूब बातें की। इसी मस्ती में मेरी छुट्टियां कब खत्म हो गई पता ही नहीं चला। सचमुच मेरी छुट्टियां बहुत अच्छी बीती।

- आयशा, सात (ब)

ईमानदारी सबसे बड़ा गुण

एक छोटे से गांव में एक लड़का रहता था ।जिसका नाम रोहन था। रोहन एक गरीब परिवार से था, लेकिन उसके माता-पिता ने उसे हमेशा ईमानदारी के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी थी। एक दिन रोहन को गांव के बड़े व्यापारी ने अपनी दुकान पर काम करने के लिए रखा। व्यापारी ने रोहन को एक दिन पैसे दिए और कहा कि वह बाजार से कुछ सामान खरीद कर ले आए ।

मोहन बाजार गया और सामान खरीद कर ले आया जब वह वापस आया तो उसने देखा व्यापारी ने उसे अधिक पैसे लौटा दिए हैं ,रोहन ने सोचा कि मैं इन पैसों को रख लेता हूं, लेकिन फिर उसने अपने माता-पिता की शिक्षा को याद किया कि ईमानदारी सबसे बड़ा गुण होता है। रोहन तुरंत व्यापारी के पास गया और कहा आपने मुझे अधिक पैसे दे दिए हैं मैं आपके पैसे वापस करना चाहता हूं। यह सुनकर व्यापारी बहुत खुश हुआ और उसे शाबाशी दी और उसके साथ इनाम भी दिया इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा सच और ईमानदारी की राह पर चलना चाहिए क्योंकि अगर हम ईमानदारी से अपना काम करेंगे तो हमारे साथ अच्छा ही होगा और यदि हम ईमानदारी से अपना काम नहीं करेंगे तो हमारे साथ बुरा ही होगा।

- दिव्यांशी बिष्ट, 7 ब

"संगीत का महत्व"

संगीत क्या है ?

संगीत एक साधन। है जिसमें ध्वनि और मौन का अद्भुत मेल होता है इसकी परिभाषा संस्कृत और समाज के अनुसार बदलती रहती है। सारंग देव सारंग देव द्वारा रचित "संगीत रत्नाकर" में उल्लेख है गायन, वादन और नित्य का संगम ही संगीत है।

भारतीय संगीत के बहुत सारे महत्वपूर्ण पहलू हैं स्वर , राग, गायन, वादन, लय भाव और गुरु शिष्य परंपरा जैसे तत्वों को बहुत महत्व दिया है। इन सभी पहलुओं को महत्व देने से भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशिष्टता बनी रहती है गुरु शिष्य परंपरा इस कला को पीढ़ियों तक आगे बढ़ाने में मदद करती है।

साहित्य का संगीत से क्या संबंध है?

साहित्य का संगीत से संबंध है क्योंकि हर कला का उद्देश्य भाव की अभिव्यक्ति करना है कला का कोई भी शास्त्र भाव को प्रकट करने के लिए ही होता है साहित्य की कहानियों में भाव है, चित्रकार में भाव है, और संगीत के रागों में भी भाव है जैसे ही सूर्यास्त के भाव को शब्दों को पिरोए तो साहित्य, चित्र के रूप में दिखाएं तो चित्रकारी और स्वरों में उसी भाव को पिरोए तो संगीत। माध्यम अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन भावना को व्यक्त करना ही संगीत का उद्देश्य है।

- रिद्धि सोनी, क्लास 8C द्वारा संगीत अध्यापिका का साक्षात्कार।

"प्रातः कालीन प्रार्थना सभा का महत्व"

विद्यालय की एक अच्छी शुरुआत पूरे दिन को सकारात्मक और ऊर्जावान बना देती है।

स्कूलों में प्रातः कालीन प्रार्थना सभा इसी उद्देश्य को लेकर होती है। यह एक औपचारिकता नहीं है ,बल्कि छात्र की आत्मिक ,बौद्धिक और शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रातः कालीन प्रार्थना सभा को विद्यालय की 'आत्मा 'कहते हैं। विद्यार्थी जब अपने दिन की शुरुआत प्रार्थना से करेंगे तो उनका मन शांत रहेगा और वह एकाग्रता से पढ़ाई करेंगे, तथा अनुशासन में रहेंगे।

प्रार्थना में जो देश भक्ति के गीत प्रेरक भाषण और नैतिक कहानियां विद्यार्थियों को अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। छात्र शारीरिक व्यायाम से स्वस्थ बने रहेंगे ,स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। शरीर स्वस्थ होगा तो पढ़ाई में मन लगा रहेगा। प्रार्थना सभा में छात्रों द्वारा भाषण ,समाचार वाचन, कविता पाठ के द्वारा छात्रों में आत्मविश्वास और नेतृत्व की भावना बढ़ती है। विद्यार्थियों का संपूर्ण विकास में प्रार्थना सभा का महत्वपूर्ण योगदान है। यह केवल दिन की शुरुआत नहीं बल्कि एक अच्छी सोच- विचार ,अनुशासन, आत्मविश्वास और नैतिक शिक्षा की नींव है।

- श्रेया, 8C

"सावन"

बादल घर आए नभ में छाए,
ठंडी बयारे दिल को भाये,
धरती ने ओढी हरियाली,
बरसे जैसे अमृत की प्याली।
मेंढक गए लाल किनारे,
खुशियों से भर जाए द्वारे।
किसान नाचे खेत लहराए,
सुनी आंखों में सपने आए।
बूंद की तप तप संगीत बनी,
हर शाख पर फिर प्रीत तनी।
नदियां गए मीठे राग,
मन को भाई यह सुहाना भाग।
इंद्रधनुष मुस्कान लुटाए,
बचपन फिर से बाहर आए।
मानसून का यह प्यारा मौसम,
भर दे जीवन में फिर से रस।

- ओजस रमोला 8th c

बच्चों की कलम से

सावन

सावन का मेला आया है
खुशी का रंग लाया है
हरियाली छाई धरती पर
मन में उमंग छाया है।

शिव के मंदिर में देखो भीड़
भक्तों के उमंग अटूट
जल और बेलपत्र चढ़ाते हैं ।

मन की मुरादें पाते है
प्रकृति का अद्भुत यह नजारा
खुशियों से भर दे जग सारा ।।

- ईशानी नेगी, 9 अ

सुंदर प्रकृति

कितना सुंदर है संसार,
नदिया जंगल और पहाड़ ।
तरह-तरह की ऋतुएं आती ,
रंग अपने वह खुशियां लाती ।
सावन में हरियाली होती,
रिमझिम- रिमझिम बारिश होती ।
मन को अच्छा लगता है ,
कितना सच्चा लगता है ।
हरेला में हम पेड़ लगाते ,
पानी से फिर उसे नहलाते ।
बड़े होकर वो, फल- फूल हैं देते,
बदले में कुछ भी न लेते ।
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं,
तितली भी लहराती है ।
धरती प्यारी- प्यारी लगती ,
कोयल गाना गाती है ।
प्रकृति हमारी माता है,
जो करती है हमसे प्यार ।
इसे सदा बनाए रखना ,
जन-जन से है यही पुकार ।

- हिमांशी, सात

सिखाती है मां

ममता का संचार है माँ
दुख में सहारा देती है मां।
अपनापन जताती है माँ।
सपने दिखलाती है मां ।
उंगली पड़कर चलना सिखाती है मां।
गलत तो सही करना सिखाती है मां दूसरों की मदद
करना सिखाती है माँ।
दुख में खुश रहना सिखाती है मां।
अपनी इच्छाएं दबा कर दूसरों की इच्छाएं पूरी करना
सिखाती है मां।
जीवन को खुशी-खुशी जीना सिखाती है मां।
अपनी गलतियों को न दोहराने की सीख सिखाती है
माँ।
हमेशा सुखी रहना सिखाती है मां।
अपनी खुशी दूसरों के साथ बांटना सिखाती है मां ।
दूसरे के दुख को कम करना सिखाती है मां ।
जरूरत के समय दूसरों को साथ देना सिखाती है मां।

- चित्रांशी लोहनी, 9 ब

मां

आंखों को बंद करके
जब भी मैंने ध्यान लगाया ,
जब भी सोचा जब भी देखा ।
मां मैं तुमको है पाया।
कभी हँसाती कभी रुलाती।
कभी सुलाती कभी जागाती।
जब भी कोई मुश्किल आती ।
हमको उसका हल बतलाती ।
सब कुछ सहती सब कुछ करती ।
सब कुछ झेलकर खुश वह रहती।
खुद हमारे दु:ख सहकर भी वह ।
हमको दुखों से दूर है रखती ।
कोई चाहे कुछ भी कह ले।
कोई चाहे कुछ भी कर ले
जो कोई भी धरती पर आया ।
मां तेरा उपकार चुका ना पाया।

- आनिया राणा, 9 ब

बुरांश

बुरांश एक पहाड़ी फूल है, जो वसंत ऋतु में खिलता है। यह फूल ज़्यादातर उत्तराखंड जैसे ठंडे और ऊँचाई वाले राज्यों में पाया जाता है। जब बुरांश के फूल पेड़ों पर खिलते हैं, तो पूरा जंगल लाल रंग से चमक उठता है और चारों तरफ सुंदरता फैल जाती है। इस फूल का रंग गहरा लाल होता है। यह फूल मार्च और अप्रैल के महीने में सबसे ज़्यादा खिला हुआ नज़र आता है। लोग इसे रास्तों, खेतों के किनारे, पहाड़ियों और जंगलों में चलते हुए देखते हैं। ऐसे समय में पहाड़ और रास्ते भी रंगीन और सुंदर दिखने लगते हैं। बुरांश के फूलों से स्वादिष्ट शरबत बनाया जाता है, जो गर्मी में ठंडक देता है और पीने में अच्छा लगता है। इसकी चटनी भी बनती है जो खाने में अच्छी लगती है। कुछ लोग इसे थकान या कमजोरी के लिए घरेलू उपाय के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं।बुरांश सिर्फ एक फूल ही नहीं, यह पहाड़ों की सुंदरता और पहचान का हिस्सा है। जब यह खिलता है, तो पेड़ भी सुंदर लगते हैं और देखने वालों का मन भी प्रसन्न हो जाता है। हमें ऐसे फूलों और पेड़ों की देखभाल करनी चाहिए ताकि प्रकृति की सुंदरता हमेशा बनी रहे।

– सान्वी रौथाण, ८ 'अ'

मेरा सपना

मेरा सपना है कि मैं एक दिन एक अच्छा डॉक्टर बनूं। मैं लोगों की मदद करना चाहता हूं और उन्हें बीमारियों से बचाना चाहता हूं। मैं अपने माता-पिता और शिक्षकों से प्रेरणा लेता हूं जो हमेशा मुझे सही रास्ते पर चलने की सलाह देते हैं।

मैं जानता हूं कि डॉक्टर बनने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन मैं तैयार हूं। मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात पढ़ाई करूंगा और अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ूंगा।

मुझे उम्मीद है कि मेरे सपने सच होंगे और मैं एक दिन एक अच्छा डॉक्टर बनूंगा। मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहूंगा।

- जितेन नरूला, 4

चुटकुले

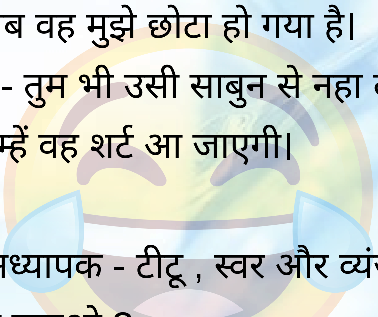

(1)- राम- मैंने साबुन से अपना शर्ट धोया और अब वह मुझे छोटा हो गया है।

श्याम - तुम भी उसी साबुन से नहा लो, फिर तुम्हें वह शर्ट आ जाएगी।

(2)- अध्यापक - टीटू , स्वर और व्यंजन में फर्क बताओ ?

टीटू - सर, स्वर मुंह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुंह के अंदर जाते हैं ।

(3)- अध्यापक - इस वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो- वसंत ने मुझे मुक्का मारा

संजू - वसंतपंचमी

पहेलियां

(1)- रात- दिन चलते उसके पैर,
नहीं किसी से उसका बैर।
हाथ- मेज- दीवार पर रहती,
अपनी बोली में वह कहती।।
मेरी तरह गतिमान बनो सब,
प्रगति करोगे आप सभी तब।
कौन है वह ऐसा ज्ञानी ?
थोड़ा भी नहीं जो अभिमानी।।

उत्तर - घड़ी

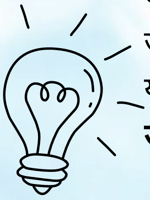

(2)- आग लगे तो बरसते फूल,
अंधकार को करता दूर ।
इसे जलाते लोग हैं तब ,
खुशियों का माहौल हो जब ।।

उत्तर - अनार बम

(3)- कोई उसे देख नहीं पाता,
पर वह हर जगह है जाता।
जीवन उस पर निर्भर करता,
यदि न मिले तो प्राणी मरता।।

उत्तर - हवा

(4)- तीन अक्षर का उसका नाम,
गगन में उड़ना होता काम।
शरद ऋतु में इन्हें उड़ाते,
टकराने पर इन्हें छुड़ाते।।
बच्चों को ये बहुत हैं भाते ,
इन्हें उड़ानें छत में जाते ।।
होते विविध आकार और रंग,
आकाश में जीतना चाहते जंग।।

उत्तर - पतंग

- आहवान चौधरी, ६ (अ)

"सुनो कहानियां, बुनो कहानियां"

मानव भारती स्कूल, देहरादून में "सुनो कहानियां, बुनो कहानियां" अभियान के अंतर्गत कक्षा 4 के छात्र-छात्राओं के साथ एक सत्र। इस सत्र में बच्चों को सरल भाषा में एक कविता सुनाई गई। बच्चों ने इस कविता को छोटी कहानी में बदला। सुनिए, बच्चे इस कविता पर अपनी कल्पना के अनुसार क्या क्या कहानियां सुना रहे हैं। बच्चों ने इस कविता पर आधारित चित्र भी बनाए।

"दोहा वाचन प्रतियोगिता"

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल में 23 अगस्त 2025 को सस्वर कबीर दास व रहीम दास के "दोहा वाचन प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा 6 से लेकर कक्षा 9 तक के छात्र-छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ सस्वर व अभिनय के साथ कबीर दास और रहीम दास के दोहों को प्रस्तुत किया। सभी दोहे शिक्षा प्रद व ज्ञानवर्धक थे।

निर्णायक का कार्य विद्यालय के संस्कृत अध्यापक डॉक्टर अनंत मणि त्रिवेदी ने किया। प्रत्येक कक्षा में प्रथम ,द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र - छात्राओं को विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अजय गुप्ता ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। कक्षा 6 अ से अंश जुयाल प्रथम स्थान पर, अग्रिमा द्वितीय स्थान पर एवं आहवान तृतीय स्थान पर रहे। कक्षा 6 ब से प्रथम स्थान पर यशवर्धन , द्वितीय स्थान पर तेजल एवं तृतीय स्थान पर अवन्या रही। कक्षा 7 अ से प्रथम स्थान पर परनवी , द्वितीय स्थान पर अभिराज एवं तृतीय स्थान पर रक्षा रही। कक्षा 7 अ से प्रथम स्थान पर दिव्यांशी , द्वितीय स्थान पर आयशा एवं तृतीय स्थान पर कनक रही। कक्षा 7 स से प्रथम स्थान पर आयुषी, द्वितीय स्थान पर वैभव एवं तृतीय स्थान पर अंशिका रही।

कक्षा 8अ से भूमिका प्रथम, प्रारंभ द्वितीय ,श्री राम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा 8 ब से सृष्टि शर्मा प्रथम स्थान,रिधम ने द्वितीय स्थान और गुनिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा 8स से रिद्धि सोनी ने प्रथम स्थान,नंदिनी ने द्वितीय स्थान, शुभांग ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा 9 अ से पलक्षा शाह ने प्रथम स्थान, अदिति ने द्वितीय स्थान और इशानी नेगी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

9 ब से प्रथम स्थान आनिया राणा, द्वितीय स्थान नव्या उनियाल, तृतीय स्थान श्रेया सेनवाल ने प्राप्त किया। 9 स से प्रथम स्थान उर्वी भाटी,द्वितीय स्थान नव्या पांडेय ,तृतीय स्थान रिश्मिता राणा ने प्राप्त किया। सभी बच्चे बधाई के पात्र हैं।

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265

आत्मानं विद्धि